सामान्यीकरण (Normalization)

(4), विद्यालयी संसाधनों में सामान्यीकरण (Normalization in School Resources)

समावेशन की प्रक्रिया में विद्यालयी संसाधनों का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जाता है। इसलिये शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी प्रबंधन कला के माध्यम से संसाधनों का सर्वोत्तम प्रयोग कर सके। अतः विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिये विद्यालयी संसाधनों के प्रबन्धन में निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिये :—

(i) विद्यालयी संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर ही गतिविधियों का आयोजन करना चाहिये, जिससे समावेशन की प्रक्रिया में संसाधनों का अभाव उत्पन्न न हो।

(ii) विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के बहु आयामी प्रयोग को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिये जैसे खेल के मैदान का उपयोग खेल के लिये भी किया जा सकता है तथा उसको स्वच्छ कराकर परिवेशीय स्वच्छता के प्रति छात्रों के मन में अनेक जिज्ञासाएं उत्पन्न की जा सकती है।

(iii) विद्यालयी संसाधनों के अन्तर्गत मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के मध्य प्रबंधन कला के माध्यम से सामंजस्य स्थापित करना चाहिये, जिससे समावेशित अधिगम की प्रक्रिया सम्पन्न हो सके।

Scanned with CamScanner

(IV) गतिविधियों का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिये जिससे की छात्रों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से कार्य करने का अवसर मिले जिससे छात्रों की प्रत्येक गतिविधि में पूर्ण संलग्नता बनी रहे।

(V) गतिविधियों का स्वरूप सरल से कठिन की ओर होना चाहिये जिससे छात्रों की गतिविधियों में रुचि बनी रहे तथा धीरे-धीरे छात्र कठिन गतिविधियों को सीखने में अपनी जिज्ञासा प्रकट कर सकें।

(5). सामुदायिक संसाधनों में सामान्यीकरण (Normalization in Community Resources)

समावेशन की प्रक्रिया मे शिक्षकों से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह समुदायी मे उपलब्ध संसाधनो को क्रमबद्ध एवं प्रबन्धित रूप मे प्रयोग कर सके जिससे एक समुदायी के सभी संसाधनो का उपयोग सर्वोत्तम रूप मे हो सके तथा समावेशी बालकों के लिये अधिगमन की ध्यान रखना चाहिये।

(1) समावेशित अधिगम की प्रक्रिया मे सर्वप्रथम शिक्षक को सभी सामुदायिक संसाधनो की सूची तैयार करनी चाहिए, जिससे कि आवश्यकता के अनुसार समाकलन की प्रक्रिया

Scanned with CamScanner

मे उनका प्रयोग किया जा सके

(ii) सामुदायिक संसाधनो मे सर्वप्रथम उन संसाधनो का प्रयोग करना चाहिए जो कि बालको के घर परिवार मे पाये जाते है, जैसे- विभिन्न प्रकार की दाल सब्जीयो एवं खाद्यान्नो के बारे मे अधिगमन कराया जा सके

(iii) समुदायिक संसाधनो का प्रयोग करते समय सामुदाय के व्यक्तियो का सहयोग प्राप्त करना चाहिये जिससे कि उनकी विशेषता एवं अनुभव का लाभ प्राप्त किया जा सके। इसके लिए शिक्षक समुदाय के व्यक्तियो से सम्पर्क करना चाहिये।

(iv) सामुदायिक कार्यक्रमों को समाकलित अधिगम में पूर्ण स्थान प्रदान करना चाहिये। इसमें एक ओर छात्रों का मनोरंजन होता है तथा दूसरी ओर छात्रों को सामुदायिक गतिविधियों का व्यापक ज्ञान प्राप्त होता है।

(v) सामुदायिक संसाधनों का प्रयोग करने से पूर्व उनकी प्रबन्धित एवं व्यापक योजना तैयार कर लेनी चाहिये, जिससे कि उनका सर्वोत्तम प्रयोग सम्भव हो सके।

(6). स्थानीय संसाधनो में सामान्यीकरण (Normalization in local Resources)

समावेशित अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक से स्थानीय संसाधनों के प्रबंधन की अपेक्षा भी की जाती है। इसमें छात्रों के समक्ष इन संसाधनों के प्रयोग की स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है कि कब छात्रों को क्षेत्र भ्रमण कराना है तथा कब छात्रों को डाकघर का भ्रमण कराना है। इस प्रकार की क्रियाओं का प्रबन्ध इसके अन्तर्गत आता है। स्थानीय संसाधनों के प्रबन्ध करने में निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिये —

(i) स्थानीय स्तर के संसाधनों की सूची का निर्माण करना प्रबन्ध कला का एक प्रमुख सोपान है जिससे कि शिक्षक को यह ज्ञात हो सके कि उसको उपलब्ध संसाधनों का कब और किस प्रकार प्रयोग करना है।

(ii) स्थानीय स्तर के संसाधनों का भ्रमण कराने से पूर्व उनकी समुचित व्यवस्था करनी चाहिये। इसके लिये छात्रों की योग्यता एवं स्तर को ध्यान में रखना चाहिये, जिससे कि समावेशन की प्रक्रिया सर्वोत्तम रूप में पूर्ण हो सके।

(iii) छात्रों में प्रत्येक स्थानीय संसाधनों के ज्ञान एवं प्रयोग के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करनी चाहिये। इसके पश्चात् छात्रों को उस स्थानीय संसाधन का भ्रमण कराना चाहिये।

Scanned with CamScanner

(iv) स्थानीय संसाधनों में स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करना चाहिये जिससे कि उनकी विशेषज्ञता का लाभ प्राप्त किया जा सके जैसे - कृषि सम्बन्धी ज्ञान के लिये कृषक की योग्यता का प्रयोग करना।

(v) स्थानीय संसाधनों के बारे में छात्रों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर देना चाहिये तथा उन विचारों के आधार पर ही शिक्षक को छात्रों की जिज्ञासा शान्त करने में स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करना चाहिये।

(7). शिक्षण रणनीतियों में सामान्यीकरण (Normalization in Teaching Strategies)

समावेशित अधिगम की प्रक्रिया मे शिक्षक द्वारा अनेक गतिविधियो के साथ - साथ विभिन्न शिक्षण रणनीतियो का प्रयोग किया जाता है। इन रणनीतियो के सर्वोत्तम प्रयोग के लिये प्रबन्धन की आवश्यकता होती है, जिससे एक कुशल शिक्षक द्वारा यह निश्चय किया जाता है कि कब, कहाँ और कैसे किस शिक्षण रणनीति के प्रयोग की ~~स्थापना~~ आवश्यकता है? शिक्षण रणनीतियो के प्रबन्धन मे निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान मे रखना चाहिये

(1) ~~शिक्षा~~ शिक्षण रणनीतियो की सूची निर्माण करना शिक्षक का प्रबन्धन सम्बन्धी प्रमुख दायित्व है। इसके आधार पर ही शिक्षक द्वारा आवश्यकता के अनुसार

Scanned with CamScanner

शिक्षण रणनीतियो का प्रयोग किया जाता है।

(ii) शिक्षक को सदैव समावेशी बालको की योग्यता के आधार पर ही रणनीतियो का प्रयोग को स्थान प्रदान करना चाहिये।

(iii) छात्रो के स्तर को ध्यान मे रखकर भी रणनीतियो का प्रबन्धन करना चाहिये, जैसे- प्राथमिक स्तर के छात्रो विज्ञान विषय के समाकलन मे प्रयोग एवं प्रदर्शन को अधिक महत्व प्रदान करना चाहिये

(iv) छात्रो के स्तर के अनुसार ही विभिन्न रणनितियो का प्रयोग करना चाहिये एक ही प्रकार की रणनीति का प्रयोग करने से छात्रो अब उत्पन्न हो जाती है तथा अधिगम का स्तर निम्न हो जाता है।

(v) प्रत्येक विषय के समावेश से पूर्व यह निश्चित कर लेना चाहिये कि इसमे किन-किन रणनीतियो का प्रयोग करना आवश्यक एवं अनीवार्य है? इससे समावेशन की प्रक्रिया सफल रूप से सम्पन्न होगी।

Scanned with CamScanner